Toppersnotes®
Unleash the topper in you

C–TET

केन्द्रीय शिक्षक पात्रता परीक्षा

केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड (CBSE)

भाग - 2 (स)

संस्कृत

SIERRA INNOVATIONS

विषयसूची

S No.	Chapter Title	Page No.
1	माहेश्वर सूत्र	1
2	वर्ण विचार उच्चारण स्थान	3
3	संधिः	5
4	समासा:	12
5	प्रत्ययप्रकरणम्	15
6	छन्दः शास्त्र परिचय	22
7	अव्ययानां प्रयोगः	26
8	शब्दरूपाणां	28
9	सर्वनाम रूप	34
10	धातुरूपाणां	37
11	उपसर्गा:	42
12	वाच्य परिवर्तन	43
13	सूक्तियाँ	44
14	संख्या ज्ञानं	46
15	विशेषण–विशेष्य	48
16	घटिकाचित्रसाहाय्येन समय – लेखनम्	50
17	अलंकार	54
18	प्रश्न निर्माण	56
19	अशुद्धिसंशोधनम्	57
20	हिन्दीवाक्यानां संस्कृतानुवाद	58
21	विलोमार्थी शब्द	62
22	पर्यायवाची शब्द	64
23	वचन	66

विषयसूची

S No.	Chapter Title	Page No.
24	कारकप्रकरणम्	67
25	गद्यांश एवं पद्यांश	71
26	संस्कृत शिक्षण विधयः	75
27	नवीन विधियाँआधुनिक विधिया	80
28	व्याकरणशिक्षणम्	84
29	गद्यशिक्षणम्	89
30	अनुवादशिक्षणसोपानानि	98
31	संस्कृत शिक्षण सिद्धान्ताः	109
32	संस्कृत भाषाकौशलस्य विकासः	111

1
CHAPTER

माहेश्वर सूत्र

अइउण्। ऋऌक्। एओङ्। ऐऔच्। हयवरट्। लण्। जमङणनम्। झभञ्। घढधष्। जबगडदश्। खफछठथचटतव्। कपय्। शषसर्। हल्।

- आचार्य पाणिनि ने सम्पूर्ण वर्ण समुदाय को चौदह (14) सूत्रों में प्रकट किया है, जिन्हें माहेश्वर सूत्र कहा जाता है।
- इन सूत्रों में सभी अक्षरों का उल्लेख होने के कारण इन्हें अक्षरसमाम्नाय भी कहा जाता है।
- माहेश्वर सूत्रों की कुल संख्या 14 है, जिनमें प्रथम 4 सूत्र स्वर तथा अन्तिम 10 सूत्र व्यंजन से सम्बन्धित है।
- प्रत्येक सूत्र का अन्तिम हलवर्ण इत्संज्ञक है।
- माहेश्वर सूत्रों में सभी व्यंजन ('हल्' वर्ण) हलन्त हैं, इन वर्णों में स्वर (अ) का प्रयोग केवल उच्चारणार्थ किया गया है।
- माहेश्वर सूत्रों में **'ह्'** वर्ण का दो बार उपदेश हुआ है।
- **ण्** वर्ण की दो बार इत्संज्ञा हुई है।
- छठे सूत्र **लण्** के लकार में विद्यमान अकार (**अँ**) भी इत्संज्ञक है।
- माहेश्वर सूत्रों के अनुसार अन्तस्थ वर्णों का व्यवस्थित क्रम है– **य् व् र् ल्।**
- माहेश्वर सूत्रों के अनुसार ऊष्म वर्णों का व्यवस्थित . क्रम है– **श् ष स् ह्।**
- माहेश्वर सूत्रों से प्रत्याहारों का निर्माण भी होता है अतः इन्हें **प्रत्याहार सूत्र** भी कहा जाता है।
- माहेश्वर सूत्रों से आदि वर्ण को अन्तिम इत्संज्ञक वर्ण के साथ मिलाकर 'आदिरन्त्येन सहेता' सूत्र से निम्नानुसार प्रत्याहारों का निर्माण किया जाता है।

क्र.सं.	प्रत्याहार	वर्ण
1.	अण्	अ इ उ।
2.	अक्	अ इ उ ऋ ऌ।
3.	अच्	अ इ उ ऋ ऌ ए ओ ऐ औ। सभी स्वर (अचः स्वराः)
4.	अट्	अ इ उ ऋ ऌ ए ओ ऐ औ ह् य् व् र्।
5.	अण्	अ इ उ ऋ ऌ ए ओ ऐ औ ह् य् व् र् ल् ।
6.	अम्	सभी स्वर, य् व् र् ल् ञ् म् ङ् ण् न्।'
7.	अश्	सभी स्वर, ह् य् व् र् ल् वर्गों के 3, 4, 5 वर्ण।
8.	अल्	सभी वर्ण।
9.	इक्	इ उ ऋ ऌ।
10.	इच्	इ उ ऋ ऌ ए ओ ऐऔ
11.	इण्	इ उ ऋ ऌ ए ओ ऐ औ ह य् व् र् ऌ
12.	उक्	उ ऋ ऌ।
13.	एङ्	ए ओ।
14.	एच्	ए ओ ऐ औ।
15.	ऐच्	ऐ औ।
16.	खय्	वर्गों के 1, 2 वर्ण
17.	खर्	वर्गों के 1, 2 वर्ण श्, ष, स्।
18.	ङम्	ङ् ण् न्।
19.	चय्	च्, ट्, त्, क् प्।
20.	चर्	च्, ट्, त्, क् प् श्, ष, स्।
21.	छव्	छ्, ठ्, थ्, च्, ट्, त्।
22.	जश्	ज्, ब्, ग्, ड्, द्।
23.	झय्	वर्गों के 1, 2, 3, 4 वर्ण।
24.	झर्	वर्गों के 1, 2, 3, 4 वर्ण श्, ष, स्।
25.	झल्	वर्गों के 1, 2, 3, 4 वर्ण श्, ष्, स्, ह।
26.	झश्	वर्गों के, 3, 4 वर्ण।
27.	झष्	झ्, भ्, घ्, ढ्, ध् (वर्गों के चतुर्थ वर्ण)
28.	बश्	ब्, ग्, ड्, द्।
29.	भष्	भ् घ् ढ् ध् (झ् को छोड़कर वर्गों के चतुर्थ वर्ण।)
30.	मय्	ञ् को छोड़कर वर्गों के 1,2,3,4,5 वर्ण।
31.	यञ्	य्, व्, र्, ल् वर्गों के 5 वें वर्ण, झ्, भ्।

Toppersnotes
Unleash the topper in you

32.	यण्	य्, व्, र्, ल्। (अन्तःस्थ वर्ण)
33.	यम्	य्, व्, र्, ल्, ञ्, म्, ङ्, ण्, न्,।
34.	यय्	य्, व्, र्, ल्, वर्गों के 1,2,3,4,5 वर्ण।
35.	यर्	य्, व्, र्, ल्, वर्गों के 1,2,3,4,5 वर्ण, श्, ष्, स्।
36.	रल्	य्, व् के अलावा सभी व्यंजन।
37.	वल्	य् के अलावा सभी व्यंजन।
38.	वश्	व्, र्, ल्, वर्गों के 3, 4, 5 वर्ण।
39.	शर्	श्, ष्, स्।
40.	शल्	श्, ष्, स्, ह्। (ऊष्म वर्ण)
41.	हल्	सभी व्यंजन
42.	हश्	ह्, य्, व्, र्, ल्, वर्गों के 3,4,5
43.	ञम्	ञ्, म्, ङ्, ण्, न्।
44.	रँ	र्, ल्।

ध्यातव्य

1. प्रत्याहारों में वर्गों के 1,2,3,4,5 वर्णों से तात्पर्य क वर्ग, च वर्ग, ट वर्ग, त वर्ग एवं प वर्ग के प्रथम द्वितीय, तृतीय, चतुर्थ व पGचम वर्ण से है।
2. अष्टाध्यायी में प्रत्याहारों की संख्या 41 या (रँ प्रत्याहार को जोडकर 42) मानी गई हैं। इनके अलावा वार्तिकों में 'चय' तथा उणादि सूत्रों में 'ञम्' प्रत्याहार को मानकर प्रत्याहारों की कुल संख्या 44 मानी गई हैं।
3. लघुसिद्धान्तकौमुदी में प्रत्याहारों की संख्या 42 मानी गई है।
4. इन प्रत्याहारों में 'अण्' प्रत्याहार का दो बार पाठ किया गया है।

Toppersnotes
Unleash the topper in you

2 CHAPTER वर्ण विचार उच्चारण स्थान

विभिन्न शब्दों के उच्चारण करने में मुख से निकली ध्वनियाँ अक्षर कहलाती है क्योंकि इनका कभी क्षर (विनाश) नहीं होता है। इन्हीं अक्षरों को लिखकर प्रकट करने के लिए विभिन्न चिह्नों का प्रयोग किया जाता है, उन चिह्नों को वर्ण कहा जाता है।

वर्ण भेद दो प्रकार के होते हैं –

1. **स्वर** – स्वरों की कुल संख्या – 13 हैं। ये है – अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ, लृ, ए, ऐ, ओ, औ।
2. **व्यंजन** –इनकी संख्या कुल 33 है। यथा – क वर्ग, च वर्ग, ट वर्ग, त वर्ग, प वर्ग, य, व, र, ल, (अंतःस्थ), श, ष, स, ह (ऊष्म वर्ण)।

स्वर के भेद

- ह्रस्व / मूल स्वरः (5) – अ, इ, उ, ऋ, लृ (एकमात्रिक)
- दीर्घः स्वरः (8) – आ, ई, ऊ, ॠ, (द्विमात्रिक)
- संयुक्त स्वराः / मिश्रित स्वराः – (4)
- प्लुप्तः स्वरः (9) – सर्वे स्वराः (त्रिमात्रिकः)

नोट – संस्कृतभाषायां स्वराः – 9
संस्कृतवर्णमालायां कुल स्वराः – 13
पाणिनीय शिक्षायां स्वराः – 21 / 22

व्यंजन के भेद

- स्पर्श वर्णाः – कादयः माऽवसानाः – 25 वर्णाः
  अपरनाम उदित् वर्णाः – कु चु टु तु पु – 25 वर्णाः
- अन्तःस्थ वर्णाः / यण् – य् व् र् ल् – 4 वर्णाः
- ऊष्म वर्णाः / शल् – श् ष् स् ह् – 4 वर्णाः
- अयोगवाहाः (4)
  विसर्गः (ाः)
  अनुस्वारः (ां)
  जिह्वामूलीयः (ᳵक, ᳵख)
- उपध्मानीय (ᳵप, ᳵफ)
- यमा (4) कुँ, खुँ, गुँ, घुँ
  दुःस्पृष्ट – ळ

नोट – संस्कृत भाषायां व्यंजनानि – 33
पाणिनीय शिक्षानुसारं व्यंजनानि = 42
संस्कृत भाषायां वर्णाः – 9 + 33 = 42
संस्कृत वर्णमालायां वर्णाः – 13 + 33 = 46
पाणिनीय शिक्षानुसारं
वर्णा : 21 / 22 + 42 = 63 / 64

प्रयत्नः 1 आभ्यन्तर प्रयत्नः (5)

↓

(i) स्पृष्टम् – स्पर्शवर्णानाम् – कादयो मादवसनाः (25)
('क', तः, 'म' पर्यन्तम्)
(ii) ईषत्स्पृष्टम् – य् व् र् ल्।
(iii) ईषद्विवृतम् – श् ष् स् ह।
(iv) विवृत्तम् – स्वराणाम् अच् (9)
(v) संवृतम् – ह्रस्व 'अ' वर्णस्य प्रयोगदशायाम् संवृतम्
प्रक्रियादशायाम् – विवृतम्

2 **बाह्य प्रयत्नः** – (11)

(i) विवार – श्वास – अघोष – 1, 2 वर्ण श् ष् स्, विसर्ग।
(ii) संवार – नाद् – घोष – 3, 4, 5 वर्ण ह्, य् व् र् ल् , अनुस्वार।
(iii) अल्पप्राण – 1, 3, 5 वर्ण – य् व् र् ल्, अनुस्वार।
(iv) महाप्राण – 2, 4 वर्ण – श् ष् स् ह्, विसर्ग।
(v) उदात्त – अनुदात्त – स्वरित – सर्वे स्वराः (अच्) – (9)।

उच्चारण स्थानम् – मूल उच्चारण स्थानानि – 7
पाणिनी अनुसारम् – 8 (7 + 1 उरस्)
संस्कृत वर्णमालायाः कुल उच्चारणस्थनानि – 11

व्याकरणस्य त्रिमुनि

1. पाणिनी → सूत्रकारः → अष्टाध्यायी
2. कात्यायन / वररूचि → वर्तिकारः → वार्तिकानि
3. पंतजलि → भाष्यकारः → महाभाष्यम् → ग्रन्थों में व्याकरण को 'शब्दानुशानम्' भी कहा गया है।

(i) अष्टाध्यायी – 8 अध्याय (पाणिनी)
(ii) वार्तिकम् – 836 (कात्यायन)
(iii) महाभाष्यम् – 84 अध्याय (पतंजलि)

नोट

(i) भट्टोजिदीक्षित के शिष्य वरदराजाचार्य – 'लघुसिद्धांत कौमूदी' नामक रचना लिखी है।

(ii) पाणिनीय शिक्षा के अनुसार – कुल स्वर – 21/22
कुल व्यंजन – 42
कुल वर्ण – 63/64

संयुक्त वर्ण – क् + ष् = क्ष् (क् + ष = क्ष)
त् + र् = त्र् (त् + र = त्र)
ज् + ञ् = ज्ञ् (ज् + ञ = ज्ञ)

उच्चारण स्थानों के आधार पर वर्णों का विभाजन

1.	अकुहविसर्जनीयानां कण्ठः	– अ, आ, क वर्ग, ह् (:) विसर्ग	– कण्ठ
2.	इचुयशानां तालु	– इ, ई, च वर्ग, य्, श्	– तालु
3.	ऋटुरषाणां मूर्धा	– ऋ, /, ट वर्ग, र्, ष्	– मूर्धा
4.	लृतुलसानां दन्ताः	– लृ, त वर्ग, ल्, स्	– दन्त
5.	उपूपध्मानीयानामोष्ठौ	– उ, ऊ, प वर्ग, ˘प ˘फ	– ओष्ठ
6.	ञमङणनानां नासिका च	– ङ., ञ्, ण्, न्, म्	– नासिका
7.	एदैतोः कण्ठतालु	– ए, ऐ	– कण्ठतालु
8.	ओदौतोः कण्ठोष्ठम्	– ओ, औ	– कण्ठोष्ठ
9.	वकारस्य दन्तोष्ठम्	– व्	– दन्तोष्ठ
10.	जिह्वामूलीयस्य जिह्वामूलम्	– ˘क, ˘ख	– जिह्वामूल
11.	नासिकाऽनुस्वारस्य	– (ं)	– नासिका

स्वरों के वैदिक भेद 3 है–

1. **उदात्त स्वर ("उच्चैरूदात्तः")** – ऊपर भाग से बोले जाने वाले अच् स्वर उदात्त कहलाते है। इसका कोई चिह्न नहीं होता है। जैसे – अ, इ, उ।

2. **अनुदात्त स्वर ("नीचैरनुदात्तः")** – निम्न से उच्चरित स्वर अनुदात्त कहलाते हैं। अनुदात्त की नीचे पड़ी रेखा का प्रयोग होता है। जैसे – अ, इ, उ।

3. **स्वरित स्वर ("समाहारः स्वरितः")** – उदात्त व अनुदात्त का समाहार या मिश्रण स्वरित स्वर कहलाता है। स्वरित के ऊपर खड़ी रेखा का प्रयोग होता है। जैसे– अ, इ, ऊ।

3 CHAPTER

संधिः

(व्युत्पत्ति :– वि + आङ्. + कृ + ल्युट्)

व्युत्पत्ति – सम उपसर्ग + डुधाञ् (धा) धातु + कि प्रत्यय (सम् + धा + कि)

भेदाः – स्वर सन्धिः (अच् सन्धिः)

1. **दीर्घ :** – संधि (अकः सवर्णे दीर्घः) लृकार का दीर्घ नहीं होता हैं।
   (i) अ/आ + अ/आ = आ
   (ii) इ/ई + इ/ई = ई
   (iii) उ/ऊ + उ/ऊ = ऊ
   (iv) ऋ/ॠ + ऋ/ॠ = ॠ
   (v) लृ + लृ = लृ

यथा –परि + ईक्षा = परीक्षा

हरि + ईशः= हरीशः

गुरु + उपदेशः = गुरूपदेशः

मातृ + ऋणम् = मातृणम्

पितृ + ऋद्धिः = पितृद्धि

लृ + लृकारः = लृकारः

2. **गुण सन्धि** – (''अदेङ्गुणः'')
   - अर्थ – **अ** या **आ** के बाद **इ** या **ई** आये तो दोनों के स्थान पर ए हो जाता हैं।
     अ या आ के बाद उ अथवा ऊ है तो दोनों के स्थान पर ओ हो जाता है।
   - अ अथवा आ + ऋ/ॠ आये तो अर् हो जाता हैं।
   - अ अथवा आ के बाद लृ आये तो अल् हो जाता हैं।

यथा – सुर + इन्द्रः = सुरेन्द्रः

सूर्य + उदयः = सुर्योदयः

महा + ऋषिः = महर्षिः

तव + लृकारः = तवल्कारः

3. **वृद्धि सन्धि** – (''वृद्धिरादैच्'')

इसी प्रकार – अ/आ + ए = ऐ

अ/आ + ओ = औ

अ/आ + ऐ = ऐ

अ/आ + औ = औ

यथा – एव + एषः = एवैषः

वन + औषधिः = वनौषधिः

च + एव = चैव

स्थूल + ओतुः = स्थुलौतुः

विशेष उदाहरण – प्र + एधते = प्रैधते

प्र + ऊढिः = प्रौढ़िः

वसन + ऋणम् = वसनार्णम्

4. **यण् सन्धि** – (''इकोयणचि'')

जैसे – इ/ई + असमान स्वर = य्

उ/ऊ + असमान स्वर = व्

ऋ/ॠ + असमान स्वर = र्

लृ + असमान स्वर = ल्

यथा – नास्ति + एव = नास्त्येव

सति + अपि = सत्यपि

सु + अस्ति = स्वस्ति

लृ + अनुबन्धः = लनुबन्धः

5. **अयादि सन्धि** –
   (i) (''एचोऽयवायावः'')
   जैसे – ए + अच् (स्वर) = अय्
   ओ + अच् (स्वर) = अव्
   ऐ + अच् (स्वर) = आय्
   औ + अच् (स्वर) = आव्

यथा –

हरे + ए = हरये

नै + अकः = नायकः

ने + अनम् = नयनम्

जे + अः = जयः

पो + अनम् = पवनम्

धर्मार्थो + उच्यते = धर्मार्थावुच्यते

(ii) ''वान्तो यि प्रत्यये''

यथा – गो + यम् (ग् + अव् + यम्) = गव्यम्

नौ + यम् (न् + आव् + यम्) = नाव्यम्

6. **पररूप संधि**

(i) (''एङि पररूपम्'')

अर्थ – अकारान्त उपसर्ग से परे धातु के पहले एड़ (ए, ओ) वर्ण होता हैं तो उन पूर्व और पर् दोनों वर्णों के स्थान पर पररूप एकादेश होता हैं। पररूप सन्धि वृद्धि सन्धि का अपवाद हैं।

यथा – प्र + एजते = प्रेजते

उप + ओषति = उपोषति

(ii) ''शकन्धादिषु पररूप वाच्यम्'' (वार्तिक)

''अचोऽन्त्यादि टि''

यथा – मनस् + ईषा = मनीषा

कर्क + अन्धुः = कर्कन्धुः

7. **पूर्वरूप सन्धि** – (''एङः पदान्तादित'')

यथा – हरे + अव = हरेऽव

विष्णो + अव = विष्णोऽव

व्यंजन संधि (हल् सन्धि)

1. **श्चुत्व सन्धि** – (''स्तोः श्चुना श्चुः)

स् त् थ् द् ध् न्

↓ ↓ ↓ ↓ ↓ ↓

श् च् छ् ज् झ् ञ्

यथा – हरिस् + शेते = हरिश्शेते

कस् + चित् = कश्चित्

शार्ङि.न् + जयः = शार्ङि.Gजयः

राज् + नी = राज्ञी

अपवाद – श वर्ण के बाद त वर्ग होने पर श्चुत्व नहीं होता हैं।

यथा – प्रश् + नः = प्रश्नः

2. **ष्टुत्व सन्धि** – (''ष्टुना ष्टुः'')

स् त् थ् द् ध् न्

↓ ↓ ↓ ↓ ↓ ↓

ष् ट् ठ् ड् ढ् ण्

यथा – रामस् + षष्ठः = रामष्षष्ठः

उद् + डयनम् = उड्डयनम्

इष् + तः = इष्टः

सर्पिष् + तमम् = सर्पिष्टमम्

अपवाद – पदान्त ट वर्ग से परे नाम भिन्न सकार या त वर्ग को ष्टुत्व नहीं होता हैं।

यथा – षट् + सन्तः = षट्सन्तः

षट् + तरवः = षट्तरवः

3. **चर्त्व सन्धि** – (''खरि च'')

अर्थ –1,2,3,4 वर्ण के बाद वर्ग का 1,2, श् ष्, स् वर्ण हो तो पूर्व वर्ण के स्थान पर उसी वर्ग का प्रथम वर्ण आदेश हो जाता हैं।

यथा – सद् + कारः = सत्कारः

लिभ् + सा = लिप्सा

विपद् + कालः = विपत्कालः

समिध् + सु = समित्सु

उद् + पन्नः = उत्पन्नः

लभ् + स्यते = लप्स्यते

4. **जश्त्व सन्धि**

(i) (''झलां जशोऽन्ते'')

क्, च्, ट्, त्, प्

↓ ↓ ↓ ↓ ↓

ग् ज् ड् द् ब्

यथा – वाक् + ईशः = वागीशः

वाक् + दानम् = वाग्दानम्

सुप् + अन्तः = सुबन्तः

(ii) ''झलां जश झशि''

अर्थ – पद के बीच में झल् के स्थान पर जश् हो जाता हैं झश् परे रहते अर्थात् वर्गो के 1, 2, 3, 4 तथा श् ष् स् ह् को जश् (उसी वर्ग का तृतीया वर्ण) हो जाता हैं। यदि बाद में वर्गो का तीसरा, चौथा वर्ण हो।

यथा – बुध् + धिः = बुद्धिः

दुध् + धम् = दुग्धम्

लभ् + धः = लब्धः

5. **अनुनासिक संधि**

(i) (''यरोऽनुनासिकेऽनुनासिको वा'')

क् च् ट् त् प्

↓ ↓ ↓ ↓ ↓

ङ. ञ् ण् न् म्

यथा – जगत् + नाथः = जगन्नाथ

वाक् + महिमा = वाङ्.महिमा

(ii) ''प्रत्यये भाषयां नित्यम्''

यथा – वाक् + मयः = वाङ्.मयः

अप् + मयम् = अम्मयम्

6. **अनुस्वार संधि**

(i) ("मोऽनुस्वारः")

अर्थ – यदि पद के अन्त में म् के बाद वर्ण व्यंजन होता है, तो म् के स्थान पर अनुस्वार हो जाता हैं।

यथा – हरिम् + वन्दे – हरिंवन्दे

अहम् + गच्छामि – अहंगच्छामि

(ii) ("नश्चापदान्तस्य झलि")

यथा – यशान् + सि = यशांसि

हन् + सि = हंसि

(iii) ("मो राजिसमः क्वौ")

अर्थ – क्विप् प्रत्ययान्त राज् धातु के परे रहते सम् के म् का म् ही होता हैं। यह सूत्र अनुस्वार सन्धि का अपवाद हैं।

यथा – सम् + राट् = सम्राट

सम् + राजः = सम्राजः

7. **अनुस्वार परसवर्ण संधि** – ("अनुस्वारस्य यपि परसवर्णः")

अर्थ – यदि पद के मध्य अनुस्वार के बाद श् ष् स् ह् को छोड़कर कोई भी व्यंजन आए तो अनुस्वार के स्थान पर आगे वाले वर्ण का पGचम हो जाता हैं।

यथा–

शांत + तः = शान्तः

गुं + जनम् = गुGजनम्

गुं + फितः = गुम्फितः

8. **पूर्व सवर्ण संधि** – ("झयो होऽन्यतरस्याम्")

अर्थ – वर्गो के 1, 2, 3, 4 वर्ण के आगे 'हकार' के रहने पर उसको विकल्प से पूर्व सवर्ण हो जाता हैं अर्थात् पूर्व वर्ण के अनुसार उसी वर्ग का चतुर्थ वर्ण हो जाता हैं। विकल्प में जश्त्व सन्धि होती हैं।

यथा – वाक् + हरिः – वाग्घरि : (पूर्व सवर्ण), वाग्हरिः (जश्त्व)

उद् + हारः – उद्धारः (पूर्व सवर्ण), उद्हारः (जश्त्व)

9. **लत्व सन्धि ("तोर्लि")**

अर्थ – त वर्ग के बाद ल् होने पर त वर्ग (त्, थ्, द्, ध्, न्) के स्थान पर ल् हो जाता हैं।

यथा – तद् + लीनः = तल्लीनः

भगवद् + लीला = भगवल्लीला

नोट – पूर्व पद के अन्त में न् हो और सामने ल् होन पर अनुनासिक (लँ्) हो जाता हैं –

यथा – विद्वान् + लिखित – विद्वाँल्लिखित

10. **छत्व सन्धि ("शश्छोऽटि")**

अर्थ – यदि श् के पहले पदान्त में किसी वर्ग का 1, 2, 3, 4 वर्ण अथवा य् व् र् ल् ह् हो तो श् के स्थान पर छ् हो जाता हैं।

यथा –

तद् + शिवः – तच्छिवः (छत्व) तच्शिवः (श्चुत्व)

तद् + शिला – तच्छिला (छत्व) तच्शिला (श्चुत्व)

तद् + श्रुत्वा – तच्छ्रुत्वा (छत्व), तच्श्रुत्वा (श्चुत्व)

सत् + शीलः – सच्छीलः (छत्व), सच्शीलः (श्चुत्व)

उद् + श्वासः – उच्छ्वासः (छत्व), उच्श्वासः (श्चुत्व)

विसर्ग संधि

जब विसर्ग के स्थान पर कोई भी परिवर्तन होता हैं तब वह विसर्ग संधि कही जाती हैं। विसर्ग (:) का स्वर वर्ण अथवा व्यंजन वर्ण से मेल होने पर जब विसर्ग में कोई परिवर्तन होता हैं तो उसे विसर्ग सन्धि कहते हैं।

यथा – नमः + ते = नमस्ते

वायुः + वाति = वायुर्वाति

विसर्ग सन्धि के भेद

1. **सत्व सन्धि –** ("विसर्जनीयस्य सः")

- विसर्ग (:) + 1,2 वर्ण या श् ष् स् वर्ण हो तो विसर्ग के स्थान पर 'स्' हो जाता हैं।

  यथा – विष्णुः + त्राता = विष्णुस्त्राता

  हरिः + त्राता = हरिस्त्राता

- विसर्ग से परे श् च् छ् हो तो विसर्ग का 'श्' तथा यदि ष् ट् ठ् हो तो विसर्ग का 'ष्' हो जाता हैं।

2. **उत्व सन्धि**

(i) ("अतो रोरप्लुतादप्लुते")

अर्थ – जब विसर्ग (:) के पहले ○स्व अ हो तथा विसर्ग (:), के बाद में भी ○स्व अ स्वर हो तो विसर्ग (:) के स्थान पर ओ तथा बाद में आने वाले ○स्व अ के स्थान पर अवग्रह चिह्न (ऽ) लगा दिया जाता हैं। यहाँ सन्धि विच्छेद करते समय 'स्' रखा जाना चाहिए।

यथा – शिवस् (:) + अर्च्यः = शिवाऽर्च्यः

सस् (:) + अपि = सोऽपि

कस् (:) + अयम् = कोऽयम्

Unleash the topper in you

(ii) (''**हरि च**'') – यदि विसर्ग के पहले ०स्व अ हो और विसर्ग (:) के आगे किसी भी वर्ग का तीसरा चौथा, पाँचवा अथवा य् व् र् ल् ह् – इन बीस वर्णों में से कोई भी एक वर्ण हो तो विसर्ग (:) के पहले वाले अ तथा विसर्ग (:) दोनों के स्थान पर 'ओ' हो जाता हैं।

यथा – नमस् (:) + नमः = नमो नमः

मनस् (:) + रथः = मनोरथः

3. **रुत्व संधि – (''ससजुषो रूः'')**

अर्थ – यदि विसर्ग के पूर्व अ, आ को छोड़कर कोई स्वर हो और उस विसर्ग (:) के बाद कोई स्वर वर्ग का तीसरा, चौथा, पाँचवाँ वर्ण य् व् र् ल् ह् वर्ण हो तो विसर्ग का र् हो जाता हैं।

यथा – दयालुः + अपि = दयालुरपि

ज्योतिः + गमयः = ज्योतिर्गमयः

पुनः + अत्र = पुनस्त्र

4. **रेफ लोप संधि**

(i) (''**रोरि**'')

अर्थ – यदि र् (:) के बाद र् हो तो पूर्व र् का लोप हो जाता हैं।

(ii) ''**द्रलोपे पूर्वस्य दीर्घाऽणः**''

अर्थ – ढ् या र् का लोप होने की स्थिति में उससे पूर्व अण्

(अ, इ, उ) स्वरों का दीर्घ आ, ई, ऊ हो जाता हैं।

यथा – (पुनः) पुनर् + रमते = पुनारमते

(कविः) कविर् + राजते = कवीराजते

(भानुः) भानुर् + राजते = भानू राजते

सन्धियों के अन्य उदाहरण

(दीर्घ स्वर सन्धि)

दैत्य + अरिः = दैत्यारिः

विष्णु + उदयः = विष्णूदयः

श्री + ईशः = श्रीशः

विद्या + अर्थीः = विद्यार्थीः

परम + अर्थः = परमार्थः

देव + आलयः = देवालयः

विद्या + आलयः = विद्यालयः

ज्ञान + अर्जनम् = ज्ञानार्जनम्

विद्या + अभ्यासः = विधाभ्यासः

गौरी + ईशः = गौरीशः

रवि + इन्द्र = रवीन्द्रः

मही + इन्द्रः = महीन्द्रः

कवि + ईश्वरः = कवीश्वरः

लघु + उत्तरम् = लघूत्तरम्

भू + उदयः = भूदयः

चमू + ऊर्जः = चमूर्जः

कर्तृ + ऋद्धिः = कर्तृद्धि

गम्लृ + लृकारः = गम्लृकारः

पद्लृ + लृकारः = पद्लृकारः

(गुण स्वर सन्धि)

नर + ईशः = नरेशः

देव + ईश्वरः = देवेश्वरः

महा + इन्द्रः = महेन्द्रः

रमा + ईशः = रमेशः

रम्भा + उरुः = रम्भोरुः

मया + उक्तं = मयोक्तंगंगा+ उर्मिः = गंगोर्मिः

चन्द्र + उदयः = चन्द्रोदयः

भारत + ऋषभः = भारतर्षभः

सदा + ऋणः = सदर्णः

कृष्ण + ऋद्धिः = कृष्णर्द्धिः

उत्तम + ऋणः = उत्तमर्णः

सप्त + ऋषयः = सप्तर्षयः

देव + ऋषिः = देवर्षिः

मम + लृकारः = ममल्कारः

तथा + लृकारः = तथल्कारः

कदा + लृकारः = कदल्कारः

(वृद्धि सन्धि)

मम + एकः = ममैकः

सदा + एव = सदैव

अत + एवः = अतैवः

जल + ओघः = जलौघः

प्र + औषति = प्रौषति

कृष्ण + औत्कण्ठयम् = कृष्णौत्कण्ठ्यम्

महा + औत्सुक्यम् = महौत्सुक्यम्

वृद्धि सन्धि के कुछ विशेष उदाहरण (अपवाद)

उप + एति = उपैति

उप + एधते = उपैधते

प्रष्ठ + ऊहः = प्रष्ठौहः

विश्व + ऊहः = विश्वौहः

स्व + ईरी = स्वैरी

प्र + ऋणम् = प्रार्णम्

कम्बल + ऋणम् = कम्बलार्णम्

प्र + ऋच्छति = प्रार्च्छति

प्र + एष्यः = प्रैष्यः

अक्ष + ऊहिनी = अक्षोहिणी

(यण् सन्धि)

सुधी + उपास्यः = सुध्युपास्यः

धातृ + अंशः = धात्रंशः

मधु + अरिः = मध्वरिः

लृ + आकृतिः = लाकृतिः

प्रति + उवाच = प्रत्युवाच
तानि + एव = तान्येव
धस्लृ + आदेशः = धस्लादेशः
लृ + अक्ष्यः = लक्ष्यः
नन्दिनी + अनुचरो = नन्दिन्यनुचरो
इति + उवाच = इत्युवाच
नदी + उदकम् = नद्युदकम्
वाणी + एका = वाण्येका
वधू + आगमनम् = वध्वागमनम्
सु + अस्ति = स्वस्ति
गुरु + आज्ञा = गुर्वाज्ञा
अनु + अयः = अन्वयः
तनु + अंगी = तन्वंगी
नारी + एका = नार्येका
गौरी + आत्मजः = गौर्यात्मजः
पार्वती + अधुना = पार्वत्यधुना

(अयादि सन्धि)

जे + अते = जयते
शे + अनम् = शयनम्
मुने + ए = मुनये
कवे + ए = कवये
भो + अनम् = भवनम्
श्रो + अनम् = श्रवणम्
वटो + ऋक्षः = वटवृक्षः
गै + अकः = गायकः
तस्यै + इमानि = तस्यायिमानि
नद्यै + इह = नद्यायिह
पर्वतौ + इव = पर्वताविव
मुनौ + आगते = मुनावागते
द्वौ + अत्र = द्वावत्र
गुरौ + उत्कः = गुरावुत्कः
द्वौ + एव = द्वावेव
गो + यूतिः = गव्यूतिः

अयादि सन्धि के विशेष उदाहरण

भो + यम् = भव्यम्
लौ + यम् = लाव्यम्

(पररूप सन्धि)

लाङ्ल + ईषा = लाङ्लीषा
शक् + अन्धुः = शकन्धुः
मार्त + अण्डः = मार्तण्ड़ः
हल + ईषा = हलीषा
पतत् + अंजलिः = पतGजलिः

(पूर्वरूप सन्धि)

ते + अपि = तेऽपि
गृहे + अस्मिन् = गृहेऽस्मिन्
सर्वे + अपि = सर्वेऽपि
ते + अकर्मकाः = तेऽकर्मकाः
गो + अग्रम् = गोऽग्रम्
गुरो + अस्मिन् = गुरोऽस्मिन्
अधीते + अत्र = अधीतेऽत्र
वृक्षे + अपि = वृक्षेऽस्मिन्

1. (श्चुत्व सन्धि)

रामस् + च = रामश्च
सत् + चित् = सच्चित्
सत् + चरित्रम् = सच्चरित्रम्
शरत् + चन्द्रः = शरच्चन्द्रः
तत् + शिव = तच्शिवः
अरीन् + जयति = अरीGजयति
जलात् + जायते = जलाज्जायते
तत् + चेत् = तच्चेत्

अपवाद

विश् + नः = विश्नः (श् के बाद के न को ञ नहीं)
प्रश + नः = प्रश्नः (न् को ञ नहीं)
जश् + त्वम् = जश्त्वम् (त् को च् नहीं)
अश् + नित्यम् = अश्नित्यम् (न् को ञ् नहीं)
अश् + नाति = अश्नाति (न् को ञ् नहीं)

2. (ष्टुत्व सन्धि)

हरिस् + टीकते = हरिष्टीकते
रामस् + टीकते = रामष्टीकते
ज्योतिस् + षष्ठम् = ज्योतिषष्ठम्
षस् + ठी = षष्ठी
पचन् + ढौकते = पचण्ढौकते
कृष् + नः = कृष्णः
उद् + डीन्ः = उड्डीनः

विवस्वान् + डयते = विवस्वाण्डयते

आकृष् + तः = आकृष्टः

पुष् + तिः = पुष्टिः

षट् + नवतिः = षण्णवतिः

तत् + टीका = तट्टीका

इतः + षष्ढः = इतषष्ढः

विष् + नुः = विष्णुः

अपवाद् – (ट वर्ग या षकार नहीं होता हैं।)

षट् + सन्तः = षट्सन्तः

षट् + ते = षट्ते

षट् + सन्ति = षट् सन्ति

3. जश्त्व सन्धि

अच् + अन्तः = अजन्तः

दिक् + गजः = दिग्गजः

जगत् + ईशः = जगदीशः

दिक् + अम्बरः = दिगम्बरः

आरभ् + धम् = आरब्धम्

वाक् + ईशः = वागीशः

कञ्चित् + दूरम् = किंचिद्दूरम्

षट् + रिपवः = षड्रिपवः

वाक् + रसः = वाग्रसः

उत् + देशः = उद्देशः

वाक् + ईश्वरी = वागीश्वरी

दिक् + गजः = दिग्गजः

4. (अनुनासिक सन्धि)

सत् + मतिः = सन्मतिः

एतत् + मुरारिः = एतन्मुरारिः

धिक् + मूर्खम् = धिङ्मूर्खम्

सत् + मार्गः = सन्मार्गः

वाक् + मयः = वाङ्मय

वाक् + मात्रम् = वाङ्मात्रम्

तद् + मात्रम् = तन्मात्रम्

चिद् + मात्रम् = चिन्मात्रम्

चिद् + मयम् = चिन्मयम्

अप् + मयम् = अम्मयम्

5. (पूर्व स्वर्ण सन्धि)

पूर्वसवर्ण	जश्त्व
वाक् + हीन : = वाग्घीनः	वाग्हीनः
वणिक् + हसति = वणिग्घसति	वणिग्हसति
अच् + हीनः = अज्झीन्ः	अज्हीनः
अच् + हलौ = अज्झलौ	अज्हलौ
षट् + हयाः = षड्ढयाः षड्हयाः	
मधुलिट् + हसति = मधुलिड्ढसति	मधुलिड्हंसति
तत् + हितम् = तद्धितम्	तद्हितम्
अप् + हरणम् = अब्भरणम्	अब्हरणम्
सम्पद् + हर्षः = सम्पद्धर्षः	सम्पद्हर्षः

6. (लत्व सन्धि)

तत् + लयः = तल्ल्यः

उद् + लेख = उल्लेखः

विधुत् + लेखा = विधुल्लेखा

विपद् + लीनः = विपल्लीनः

यद् + लक्षणम् = यल्लक्षणम्

महान् + लेखः = महाँल्लेखः

विसर्ग सन्धि

1. (सत्व सन्धि)

सरः + तीरम् = सरस्तीरम्

इतः + ततः = इतस्ततः

नमः + ते = नमस्ते

देवः + त्राता = देवस्त्राता

कः+ चित् = कश्चित्

नरः + चलति = नरश्चलति

रामः + च = रामश्च

वृक्षः + छादयति = वृक्षश्छादयति

हरिः + शेते = हरिश्शेते

निः + छलः = निश्छलः

धनुः + टंकारः = धनुष्टंकारः

बालः + षष्ठः = बालषष्ठः

रामः + टीकते = रामष्टीकते

ठगः + ठगति = ठगष्ठगति

2. (उत्व सन्धि)

बालः + अस्ति = बालोऽस्ति

कः + अयम् = कोऽयम्

रामः + अपि = रामोऽपि

देवः + अत्र = देवोऽत्र

काकः + अयम् = काकोऽयम्

नरः + अवदत् = नरोऽवदत्

(हशि च)

शिवः + वन्द्यः = शिवोवन्द्यः

मनः + रथः = मनोरथः

तपः + भूमिः = तपोभूमिः

पयः + दः = पयोदः

3. (रुत्व सन्धि)

आयुः + वेदः = आयुर्वेदः

गुरोः + ज्ञानम् = गुरार्ज्ञानम्

धनुः + वेदः = धनुर्वेदः

वायुः + वाति = वायुर्वाति

पितुः + इच्छा = पितुरिच्छा

तैः + अपि = तैरपि

धेनुः + धावति = धेनुर्धावति

मुनिः + अवदत् = मुनिरवदत्

4. (रेफ लोप सन्धि)

(हरिः)

हरिर् + रम्यः = हरीरम्यः

शम्भुर् + राजते = शम्भूराजते

निर् + रोगः = नीरोग

निर् + रवः = नीरवः

निर् + रसः = नीरसः

कविर् + रचयति = कवीरचयति

Toppersnotes
Unleash the topper in you

4 CHAPTER समासाः

समास की परिभाषा – जब दो या दो से अधिक पदों के बीच (मध्य) की विभक्तियों को हटाकर जब एक पद कर दिया जाता है तो उसे 'समास' कहते हैं।
'समास शब्द का अर्थ है 'संक्षेप' अर्थात् विभक्ति रहित अनेक पदों के समूह को समास' कहते हैं।
राज्ञः + पुरुषः = राजपुर पर 'राज्ञः' और 'पुरुषः' दोनों पदों के बीच की विभक्तियाँ हटा देने पर 'राजपुरुष' शब्द बनता है। अतः 'राजपुरुषः' समास–निष्पन्न शब्द है।

समास शब्द की व्युत्पत्ति

समास = सम् + अस् + घञ् = सम् + आस् + अ = समास (सम् उपसर्ग, अस् धातु, घञ् प्रत्यय)

समास विग्रह

'विग्रह' शब्द का अर्थ है अलग–अलग करना अर्थात् समस्त पदों को तोड़कर पूर्व क्रमानुसार अलग–अलग रख देना 'विग्रह' कहलाता है।
जैसे–'राजपुरुष' इस पद को (राज्ञः + पुरुषः) इस रूप में तोड़कर पूर्वक्रमानुसार अलग–अलग रख दिया गया है अतः इसे 'विग्रह' कहेंगे।

समास के भेद

संस्कृत भाषा में समास के मुख्य रूप से चार भेद होते हैं–

1. अव्ययीभाव समास
2. तत्पुरुष समास
3. द्वन्द्व समास
4. बहुब्रीहि समास

नोट – तत्पुरुष समास के मुख्यतः दो भेद होते हैं –

1. कर्मधारय समास
2. द्विगु समास

भट्टोजिदीक्षित तथा अग्निपुराण के अनुसार समास के छः भेद होते हैं।
समास के भेद का श्लेषात्मक एक श्लोक प्रसिद्ध है।

द्वन्द्वो द्विगुरपि चाहं मम गेहे नित्यमव्ययीभावः। तत्पुरुष! कर्मधारय येन स्यामहं बहुब्रीहिः॥

जिससे समास के छः भेदों का स्पष्ट उल्लेख मिलता है। इस प्रकार समास के निम्नलिखित छः भेद प्रमुख हैं।

समास के भेद

1. अव्ययीभाव समास
2. तत्पुरुष समास
3. कर्मधारय समास
4. द्विगु समास
5. बहुब्रीहि समास
6. द्वन्द्व समास

1. तत्पुरुष समास – 'उत्तरपदार्थप्रधानस्तत्पुरुष', अर्थात् जहाँ पर उत्तर (अन्तिम) पद का अर्थ प्रधान होता है वहाँ तत्पुरुष समास होता है।
जैसे– 'राजपुरुषः = राजपुरुषः' में पुरुष की प्रधानता है।

- जहाँ पर दोनों पदों में अलग–अलग विभक्तियाँ हो उसे व्यधिकरण तत्पुरुष कहते हैं। इसे ही विभक्ति तत्पुरुष भी कहते हैं।
  जैसे– राज्ञः पुरुषः = राजपुरुषः
- जहाँ पर दोनों पदों में एक समान विभक्तियाँ होती हैं उसे समानाधिकरण तत्पुरुष कहते हैं। इसे ही कर्मधारय एवं द्विगु समास भी कहते हैं।
  जैसे – कृष्णः सर्पः = कृष्णसर्पः
  विभक्ति तत्पुरुष – विभक्ति तत्पुरुष समास में दोनों पदों में अलग–अलग विभक्तियाँ होती हैं अतः इसे विभक्ति तत्पुरुष भी कहते हैं।
  विभक्ति तत्पुरुष समास सात प्रकार का होता है।

समास के भेद का चार्ट

(i) प्रथमा तत्पुरुष
(ii) द्वितीया तत्पुरुष
(iii) तृतीया तत्पुरुष
(iv) चतुर्थी तत्पुरुष
(v) पGचमी तत्पुरुष
(vi) षष्ठी तत्पुरुष
(vii) सप्तमी तत्पुरुष

(i) **प्रथमा तत्पुरुष –** तत्पुरुष समास में प्रथम पद में प्रथमा विभक्ति होती है
जैसे –

- पूर्व कायस्य = पूर्वकायः
- अपरं कायस्य = अपरकायः
- अर्धं पिपल्याः = अर्धपिप्पली

(ii) **द्वितीया तत्पुरुष** – समास की अवस्था में द्वितीया विभक्ति का लोप पाया जाता है।

जैसे –

- कृष्णम् श्रितः = कृष्णाश्रितः
- दुःखम् अतीतः = दुःखातीतः
- ग्रामं गतः = ग्रामगतः
- नरकम् पतितः = नरहरित्रा
- गजं आरूढ़ = गजारूढ़

(iii) **तृतीया तत्पुरुष** – समास की अवस्था में तृतीया विभक्ति का लोप पाया जाता है।
जैसे –

- धान्येन अर्थः = धान्यार्थः (धान्य से अर्थ)
- आचारेण निपुणः = आचारनिपुणः (आचार से निपुण)
- विद्यया हीनः = विद्याहीन (विद्या से हीन)
- अग्निननादग्धः = अग्निदग्ध
- गुरुणा सदृशः = गुरुणा सदृश (गुरु से सदृश)
- मदे रहितः = मदरहित

(iv) **चतुर्थी तत्पुरुष** – समास की अवस्था में चतुर्थी विभक्ति का लोप पाया जाता है।

- द्विजाय सुखम् = द्विजसुखम् (ब्राह्मणों के लिए सुख)
- द्विजाय अर्थम् = द्विजार्थः (द्विज के लिए यह)
- गवे रक्षितम् = गो रक्षितम् (गायों के लिए रक्षा)
- गवेहितम् = गोहितम्
- धनाय लोभः = धन लोभः
- सुखाय अर्थम् = सुखार्थम् (सुख के लिए यह)

(v) **पञ्चमी तत्पुरुष** – समास की अवस्था में पंचमी विभक्ति का लोप पाया जाता है।

- स्वर्गात पतितः = स्वर्ग पतितः (स्वर्ग से पतित)
- वृकात् भीतः वृकभीत (वृक से भीत)
- देशांत् निर्गतः देशनिर्गत (देश से निर्गत)
- अश्वात् पतितंः = अश्वपतितः
- सिंहात् भयम् = सिंहभयम् (सिंह से भय)
- रोगात् मुक्तः = रोगमुक्त (रोग से मुक्त)

(vi) **षष्ठी तत्पुरुष** – समास की अवस्था में षष्ठी विभक्ति का लोप पाया जाता है।

- राज्ञः पुरुषः = राजपुरुषः (राजा का पुरुष)
- विद्यायाः आलयः = विद्यालयः (विद्या का स्थान)
- देवानां पूजकः = देवपूजकः (देवताओं का पूजक)
- विद्याः आलयः = विद्यालय (विद्या का आलय)
- धर्मस्थ दण्डः = धर्मदण्ड़
- सुवर्णस्य मुद्रा = सुवर्णमुद्रा
- गृहस्य स्वामी = गृहस्वामी

(vii) **सप्तमी तत्पुरुष** – समास की अवस्था में सप्तमी विभक्ति का लोप पाया जाता है।

- अक्षेष शौण्ड = अक्षशौण्डः (अक्ष (पासों) में चतुर)
- वचने धूर्तः = वचनधूर्तः – (वचन में धूर्त)
- आतपे शुष्कः = आतपशुष्कः (धूप में सूखा)
- कार्ये कुशलः = कार्य कुशलः
- जले मग्नः = जलमग्नः
- शास्त्रेषु दक्षः = शास्त्रदक्षः

2. **कर्मधारय समास** – समानाधिकरण तत्पुरुष को कर्मधारय समास कहते हैं। जहाँ पर विशेषण और विशेष्य का समानाधिकरण समास होता है उसे 'कर्मधारय समास कहते हैं।

- घन + इव + श्यामः = घनश्यामः (बादल के समान काला)
- वज्रम् इव कठोरम् इति वज्रकठोरम् (वज्र के समान कठोर)
- पुरुष व्याघ्रः + इव = पुरुषव्याघ्रः (पुरुष व्याघ्र के समान)
- नरः सिंह + इव = नरसिंहः (मनुष्य सिंह के समान)
- मुखं चन्द्र + इव = मुखचन्द्रः (मुख चन्द्रमा के समान)
- पुरुषः सिंहः इव = पुरुषसिंहः (पुरुष सिंह के समान)
- महान् + राजा = महाराजः (महान् राजा)
- पीतम् + अम्बरम् = पीताम्बरम् (पीला अम्बर)

3. **द्विगु समास** – यदि कर्मधारय समास का पूर्व पद (पहला पद) संख्यावाची हो तो वह 'द्विगु समास' कहलाता है।
इसके विग्रह में षष्ठी विभक्ति का प्रयोग किया जाता है।

- पूर्वस्यां शालायां भवः = पौर्वशालाः (पूर्व की शाला में उत्पन्न)
- पंचसु कपालेषु संस्कृतः = पंचकपालः (पाँच कपालों में बनाया हुआ)
- **पञ्चभिः** गोभिः क्रीतः = पंचगुः (पाँच गायों से खरीदा गया)
- **पञ्च** गावो धनं यस्य सः = **पञ्चगवधनः** (पाँच गाय हैं धन जिसकी)
- द्वाभ्यां मासाभ्यां जातः = द्विमासजातः (दो मासों में उत्पन्न)

4. **द्वन्द्व समास –** उभयपदार्थप्रधानो द्वन्द्वः' अर्थात् जहाँ पर दोनों पदों का अर्थ प्रधान होता है उसे द्वन्द्र समास कहते हैं।

- हरिश्च हरश्च = हरिहरौ (हरि और हर)

Unleash the topper in you

- धवश्च खदिरश्च = धवखदिरौ (धव और खदिर)
- भावश्च केशवश्च = शिव केशवौ (शिव और केशव)
- हरिश्च हरश्च गुरुश्च = हरिहरगुरवः (हरि, हर और गुरु)
- कुक्कुटश्च मयूरी च = कुक्कुटमयूर्ये (कुक्कुट और मयूरी)
- ईशश्च कृष्णश्च = ईशकृष्णौ (ईश और कृष्ण)
- शिवश्च केशवश्च = शिवकेशवौ (शिव और केशव)
- पाणी च पादौ च = पाणिपादम् (हाथ और पैर)
- गंगा च शोणश्च गंगाशोणम् (गंगा और शोण)

5. अव्ययीभाव समास – 'पदार्थप्रधानोऽव्ययीभावः' अर्थात् जिसका पूर्व अथवा प्रथम पद का अर्थ प्रधान होता है उसे अव्ययीभाव समास कहते हैं। अव्ययीभाव समास का प्रथम पद का अर्थ प्रधान होता है।

- समुद्रम् = मद्रणां समृद्धिः (मद्रवासियों की समृद्धि)
- दुर्यवनम् = यवनानांः व्यृद्धि (यवनों की व्यृद्धि)
- निर्मक्षिकम् = मक्षिकाणाम भावः (मक्खियों का अभाव)
- अतिहिमम् = हिमस्य अव्ययः (हिम का नाश)

6. बहुब्रीहि समास – 'अन्यपदार्थप्रधानो बहुब्रीहिः' अर्थात् जहाँ पर अन्य पद का अर्थ प्रधान होता कहते हैं। उसे 'बहुब्रीहि' समास कहते हैं भाव यह है कि बहुब्रीहि समास में अन्य पद का अर्थ प्रधान अर्थ होता है। अर्थात् दूसरा ही अर्थ होता है

बहुव्रीहि समास के उदाहरण

- पीतानि अम्बराणि यस्य सः = पीताम्बरः (पीताम्बरधारी कृष्ण)
- दत्तं राज्यं यस्मै सः = दत्तराज्यः (दिया गया है राज्य जिसको ऐसा पुरुष)
- निर्गतं बलं यस्मात् सः = निर्बलः (जिससे बल निकल गया है ऐसा पुरुष)
- पीतम् अम्बरम् यस्य सः = पीताम्बरः (पीला है वस्त्र जिसका)
- चित्र गौः यस्य सः = चित्रतुः (चित्र (चितकबरी) गायें हैं जिसकी वह)
- व्यूढमूउरः यस्य सः = व्यूढोरस्कः (विशाल उर है जिसका वह)
- महान् आशय यस्य सः = महाशयः (महान् आशय है जिसका वह)
- चन्द्रः शेखरे यस्य सः = चन्द्रशेखरः (चन्द्र है सिर पर जिसके, ऐसे शिव)
- चक्रं पाणौ यस्य सः = चक्रपाणिः (चक्र हाथ में है जिसके, विष्णु)
- शूलं पाणौ यस्य सः = शूलपाणिः (वह जिनके पाणि (हाथ) में शूल (त्रिशूल) है – शिव)
- धनुः धारयति यः सः = धनुर्धरः (धनुष हाथ में जिनके – विष्णु)
- लम्बः उदर यस्य सः = लम्बोदरः (वह जिनके लम्बा उदर है – गणेश)

Toppersnotes Unleash the topper in you